*उभरते प्रौद्योगिकी परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता**

श्री स्वामीनाथन जे.

विशिष्ट अतिथिगण, उप गवर्नर डॉ. माइकल डी. पात्र, उप गवर्नर श्री एम.आर. राव, डीआईसीजीसी के निदेशक मंडल, डीआईसीजीसी और आरबीआई के सहकर्मीगण, देवियो और सज्जनो। आप सभी को सुप्रभात।

वैश्विक जमा बीमाकर्ताओं की इस प्रतिष्ठित सभा को संबोधित करना वास्तव में सम्मान की बात है। वित्तीय सुरक्षा-जाल प्रणाली के महत्वपूर्ण स्तंभों के रूप में जमा बीमाकर्ता बैंकिंग क्षेत्र में जनता का विश्वास बढ़ाने और समग्र वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस सम्मेलन के आयोजकों - जमा बीमाकर्ताओं का अंतरराष्ट्रीय संघ (आईएडीआई), जिसने वैश्विक मानक-निर्धारक के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, एशिया प्रशांत क्षेत्रीय समिति (एपीआरसी), और निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) - को इस आयोजन को सफल बनाने में उनके अनुकरणीय प्रयासों के लिए मेरी बधाई।

इस सम्मेलन का विषय - "विकसित होते वित्तीय परिदृश्य को समझना: जमा बीमाकर्ताओं के लिए उभरती चुनौतियाँ और संकट की तैयारी का महत्व" - वैश्विक वित्तीय क्षेत्र में हो रहे महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तनों को देखते हुए विशेष रूप से प्रासंगिक है। प्रौद्योगिकीय नवाचारों, डिजिटल भुगतान प्रणालियों के माध्यम से वित्तीय बाजारों की गहनता और बचत एवं निवेश व्यवहार में बदलते पैटर्न द्वारा संचालित ये परिवर्तन वित्तीय संस्थानों के संचालन और उभरते जोखिमों को कम करने के तरीके को नया आकार दे रहे हैं। तदनुसार, मैं इस अवसर पर विकसित होते प्रौद्योगिकी परिदृश्य के संदर्भ में वित्तीय स्थिरता पर चर्चा करूँगा।

* 14 अगस्त, 2024 को जयपुर में निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) द्वारा आयोजित जमा बीमाकर्ताओं का अंतरराष्ट्रीय संघ – एशिया प्रशांत क्षेत्रीय समिति (आईएडीआई-एपीआरसी) के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उप गवर्नर श्री स्वामीनाथन जे का भाषण।

प्रौद्योगिकी परिदृश्य से उभरते जोखिम

ऐसे युग में जहां डिजिटल परिवर्तन बैंकिंग और वित्त के हर पहलू को नया आकार दे रहा है, वित्तीय क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों का एकीकरण, अद्वितीय अवसर और बड़े जोखिम दोनों लाता है।

वास्तव में, प्रौद्योगिकी-प्रेरित प्रणालीगत जोखिम वित्तीय क्षेत्र के लिए चिंता के प्रमुख क्षेत्रों में से एक बन गया है, जिस पर बारीकी से ध्यान देने की आवश्यकता है। यह वास्तव में कुछ ही वास्तविक वैश्विक जोखिमों में से एक हो सकता है, जो दुनिया भर में संपूर्ण वित्तीय प्रणाली को खतरे में डालता है, क्योंकि डिजिटल और ऑनलाइन तकनीक राष्ट्रों, उद्योगों के बीच की सीमाओं को धुंधला कर देती है और दुनिया को एक इकाई में बदल देती है। अंतर-निर्भरता के इस बढ़ते जाल का मतलब है कि एक क्षेत्र में व्यवधान तेजी से सम्पूर्ण प्रणाली में फैल सकता है, जिससे एक साथ कई संस्थाएँ और क्षेत्राधिकारों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, प्रणालीगत जोखिम के प्रबंधन के लिए इन अंतर्संबंधों के पूर्ण दायरे को समझना आवश्यक हो गया है। जैसे-जैसे साइबर हमले या महत्वपूर्ण विक्रेता व्यवधान जैसी घटनाओं की तीव्रता और आवृत्ति बढ़ती जा रही है, दूरंदेशी जोखिम प्रबंधन, पर्याप्त नीति हस्तक्षेप और बैकअप योजनाओं के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है।

मैं प्रौद्योगिकी जोखिमों के चार प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहूंगा जिनके प्रति हमें सचेत रहने और उनका समाधान करने की आवश्यकता है।

साइबर सुरक्षा जोखिम

वित्तीय क्षेत्र अक्सर साइबर हमलों का मुख्य लक्ष्य होता है क्योंकि इसमें बड़ी मात्रा में संवेदनशील डेटा और पूंजी होती है। महत्वपूर्ण साइबर घटनाएं व्यक्तिगत वित्तीय संस्थानों के लिए सूक्ष्म-विवेकपूर्ण जोखिम पैदा कर सकती हैं, जैसे कि ऋण-शोधन क्षमता, चलनिधि, बाजार, परिचालन और प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम। यहां तक कि समष्टि स्तर पर भी, वित्तीय प्रणाली कई प्रमुख गतिविधियाँ करती है जो वास्तविक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनती हैं जैसे कि उधार देना और भुगतान, जो साइबर घटनाओं से बाधित हो सकते हैं।

इसलिए, महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को उल्लंघनों से बचाना सबसे महत्वपूर्ण है, और इसके लिए न केवल उन्नत तकनीकी

सुरक्षा की आवश्यकता है, बल्कि संगठन के सभी स्तरों पर साइबर सुरक्षा जागरूकता की एक मजबूत संस्कृति की भी आवश्यकता है। इसलिए वित्तीय संस्थानों को संभावित प्रतिकूल संयोजनों को शामिल करते हुए समय-समय पर अपने प्रणाली का परीक्षण करके मजबूत व्यवसाय निरंतरता की तैयारी करने की आवश्यकता है।

डिजिटल भुगतान

दूसरा, आज बैंकिंग लेन-देन और सेवाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा डिजिटल चैनलों के माध्यम से संचालित किया जाता है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों के विस्तार और व्यापक रूप से अपनाए जाने से ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल ऐप के माध्यम से तेज़, कम लागत वाले लेन-देन और आसान निकासी संभव हुई है। हालाँकि, यह बदलाव परिचालन स्थिरता और समुत्थानशीलता के लिए जोखिम को बढ़ाता है, जिससे पीक लोड को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आईटी प्रणाली और प्रौद्योगिकी में निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग की 24/7 उपलब्धता कमज़ोरियों को बढ़ा सकती है, जिससे दबाव की अवधि के दौरान बैंक रन और चलनिधि संकट में बहुत तेज़ी आ सकती है, क्योंकि ग्राहक पारंपरिक बैंकिंग अवधि के बाहर और बैंक शाखा में जाए बिना भी पैसे निकाल सकते हैं। इसके अलावा, यह व्यवहार सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे प्रभाव के डिजिटल स्रोतों के आने से और भी बढ़ गया है, जिन्होंने वित्तीय जानकारी को चलाने, प्रसारित करने, प्रतिकूल या अन्यथा, और एक समन्वित वित्तीय व्यवहार को ट्रिगर करने की अपनी क्षमता दर्शाई है।

ये घटनाक्रम वित्तीय संस्थानों के लिए अपनी संकटकालीन तैयारियों का पुनर्मूल्यांकन करने और उन्हें अद्यतन करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे तकनीकी प्रगति द्वारा तेजी से उत्पन्न होने वाले जोखिमों का समाधान करने और कम करने के लिए तैयार हैं। उन्हें नियमित रूप से निर्दिष्ट समय-सीमा के भीतर आकस्मिक निधि तक पहुँचने में अपनी क्षमता और प्रभावशीलता का आकलन करना चाहिए, जो कि वित्तपोषण आवश्यकताओं के प्रकार पर निर्भर करता है। अमेरिका में 2023 की घटनाओं से पता चला कि कुछ प्रभावित बैंक या तो मौजूदा "फेडरल डिस्काउंट विंडो" को चलनिधि के स्रोत के रूप में उपयोग करने के लिए तैयार नहीं थे या उन्होंने इसे वित्तपोषण स्रोतों में से एक के रूप में शामिल नहीं किया था [1]।

[1] https://som.yale.edu/story/2023/lessons-discount-window-march-2023-bank-failures

तीसरे पक्ष पर निर्भरता

यह मुझे मेरे अगले बिंदु पर ले आता है, जो तीसरे पक्षकार पर बढ़ती निर्भरता से होने वाले जोखिम हैं। बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन ने एक ही उत्पाद या सेवा के प्रावधान में कई अलग-अलग तीसरे पक्षकार की संस्थाओं को शामिल कर दिया है, जिससे तकनीकी और परिचालन निर्भरता का एक जटिल जाल बन गया है। हालाँकि, इस शृंखला में किसी भी लिंक में विफलता का प्रभाव अक्सर विनाशकारी हो सकता है जैसा कि पिछले महीने एक वैश्विक आईटी सेवा आउटेज घटना में देखा गया था। इसके अलावा, तीसरे पक्षकार रैनसमवेयर और अन्य साइबर खतरों के लिए घुसपैठ के माध्यम हो सकते हैं।

वित्तीय संस्थाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी डेटा की गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता को बनाए रखना है, चाहे वह उनके भीतर या तीसरे पक्षकार के विक्रेताओं के पास संग्रहीत, संसाधित या आदान-प्रदान में हो। इसलिए, उन्हें तीसरे पक्षकार की प्रभावी निगरानी करनी चाहिए और संभावित कमजोरियों से सुरक्षा करनी चाहिए, साथ ही परिचालन समुत्थानशीलता सुनिश्चित करने के लिए अपने महत्वपूर्ण डेटा का नियमित बैकअप बनाए रखने जैसे अन्य उपाय भी करने चाहिए।

फिनटेक और विनियामकीय एवं पर्यवेक्षी दायरे से बाहर की संस्थाओं का आगमन

चौथा, फिनटेक कंपनियों का उदय और पारंपरिक विनियामक और पर्यवेक्षी ढांचे के बाहर काम करने वाली संस्थाओं का आगमन वित्तीय क्षेत्र में जोखिम के नए आयाम प्रस्तुत करता है। जबकि फिनटेक नवाचारों ने वित्तीय समावेशन, दक्षता और ग्राहक अनुभव को बहुत बढ़ाया है, वे डेटा सुरक्षा, उपभोक्ता संरक्षण और विनियामकीय अनुपालन से संबंधित चुनौतियाँ भी उत्पन्न करते हैं।

नवाचार की तीव्र गति के साथ, यह अक्सर देखा गया है कि विनियामकीय अंतराल, यदि कोई हो, का जानबूझकर या अनजाने में उन संस्थाओं द्वारा फायदा उठाया जा सकता है जो विनियमित वित्तीय संस्थानों के समान कड़े मानकों के अधीन नहीं हो सकते हैं। यह स्थिति एक असमान अवसर को जन्म देती है और प्रणालीगत जोखिम को बढ़ाती है, क्योंकि इन अनियमित क्षेत्रों में विफलताओं या कदाचार के वित्तीय प्रणाली में दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

इन जोखिमों को कम करने के लिए, विनियामकों को अधिक चुस्त और दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाना होगा, विनियामकीय सैंडबॉक्स विकसित करना होगा, फिनटेक नवप्रवर्तकों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना होगा, और यह सुनिश्चित करना होगा कि नए प्रवेशकों को विनियामकीय ढांचे में इस तरह से एकीकृत किया जाए जिससे वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और अखंडता बनी रहे।

जमा बीमाकर्ताओं के लिए आगे का रास्ता

जमा बीमाकर्ताओं के संदर्भ में, इन प्रौद्योगिकी जोखिमों का समाधान करने के लिए एक अनुकूलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में उनकी अद्वितीय भूमिका को दर्शाता है। जमा बीमाकर्ताओं को उभरते जोखिम परिदृश्य के अनुकूल होने में सतर्क रहना चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी रणनीतियाँ, नीतियाँ और ढाँचे तकनीकी प्रगति द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से सुदृढ़ हों। मैं इस संबंध में कुछ विचारों पर विस्तार से चर्चा करना चाहूँगा, जिसमें विनियामकीय निरीक्षण, जोखिम-आधारित प्रीमियम, पर्यवेक्षी रेटिंग आकलन, प्रौद्योगिकी में निवेश और संकट की तैयारी को मजबूत करने के पहलू शामिल हैं।

विनियामकीय निरीक्षण को मजबूत करना

जैसे-जैसे वित्तीय क्षेत्र अधिक डिजिटल होता जा रहा है, जमा बीमाकर्ताओं को निगरानी तंत्र को मजबूत करने के लिए विनियामकों और पर्यवेक्षकों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसमें डिजिटल भुगतान, साइबर सुरक्षा और फिनटेक नवाचारों से जुड़े उभरते जोखिमों को शामिल करने के लिए विनियामकीय ढांचे को नियमित रूप से अपडेट करना शामिल है। सक्रिय रुख अपनाकर, जमा बीमाकर्ता यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि उनके क्षेत्राधिकार में आने वाले वित्तीय संस्थान इन जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हैं, जिससे जमाकर्ताओं का विश्वास सुरक्षित रहेगा।

जोखिम-आधारित प्रीमियम अपनाना

जमा बीमा के लिए जोखिम-आधारित प्रीमियम के कार्यान्वयन पर विचार किया जाना चाहिए। बीमा प्रीमियम को व्यक्तिगत वित्तीय संस्थानों द्वारा उत्पन्न जोखिम के स्तर से जोड़कर, जमा बीमाकर्ता बैंकों को मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल वित्तीय प्रणाली की समग्र स्थिरता को बढ़ाता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि उच्च जोखिम प्रोफाइल वाले संस्थान बीमा कोष में अधिक योगदान दें।

पर्यवेक्षी रेटिंग आकलन पर भरोसा करना

जमा बीमाकर्ता पर्यवेक्षी रेटिंग आकलन पर भरोसा करके प्रौद्योगिकी जोखिमों को और कम कर सकते हैं, जिसमें वित्तीय संस्थान की तकनीकी और परिचालन लचीलापन का मूल्यांकन शामिल है। बीमा प्रीमियम निर्धारित करने या हस्तक्षेप रणनीतियों का निर्धारण करने के लिए इन आकलनों का उपयोग करके, जमा बीमाकर्ता यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके कार्य प्रत्येक संस्थान के जोखिम प्रोफ़ाइल की व्यापक समझ रखते हैं।

जमा बीमाकर्ताओं को पर्यवेक्षकों के साथ मिलकर उन्नत जोखिम मूल्यांकन उपकरण विकसित करने की आवश्यकता है जो वित्तीय संस्थानों पर प्रौद्योगिकी-प्रेरित जोखिमों के प्रभाव को प्रभावी ढंग से पहचान और मात्राबद्ध कर सकें। इसमें वित्तीय संस्थानों के सुदृढ़ता के उनके समग्र मूल्यांकन में साइबर सुरक्षा जोखिम मूल्यांकन को एकीकृत करना, साथ ही बैंकों की डिजिटल भुगतान प्रणालियों के परिचालन समुत्थानशीलता की निगरानी करना शामिल है।

दावा निपटान प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता में निवेश

उभरते खतरों से आगे रहने के लिए, जमा बीमाकर्ताओं को अत्याधुनिक तकनीकों में निवेश करना चाहिए और आंतरिक विशेषज्ञता का निर्माण करना चाहिए। साइबर सुरक्षा, फिनटेक और डिजिटल भुगतान जैसे क्षेत्रों में निरंतर प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि जमा बीमाकर्ता टीमें संकटों का तेज़ी से और प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए सुसज्जित हैं। सूचना साझा करने के लिए उद्योग-व्यापी मंचों की स्थापना बड़े जोखिमों के विरुद्ध सामूहिक बचाव के निर्माण में मदद कर सकती है।

प्रौद्योगिकी के उपयोग से दावा निपटान प्रक्रियाओं की गति और दक्षता में भी उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। डिजिटल उपकरणों और स्वचालित प्रणालियों को एकीकृत करके, जमा बीमाकर्ता दावों को संसाधित करने में लगने वाले समय को कम कर सकते हैं, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि बैंक के विफल होने की स्थिति में जमाकर्ताओं को समय पर मुआवज़ा मिले। ये

प्रौद्योगिकियाँ धोखाधड़ी वाले दावों का पता लगाने में भी सहायता कर सकती हैं, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वैध दावेदारों को भुगतान किया जाए। दावों का तेजी से निपटान न केवल जमाकर्ताओं का विश्वास बढ़ाता है बल्कि जमा बीमा प्रणाली की विश्वसनीयता और स्थिरता को भी मजबूत करता है।

संकट की तैयारी सुनिश्चित करना

अंत में, जमा बीमाकर्ताओं को संकट की तैयारी को प्राथमिकता देनी चाहिए, व्यापक आकस्मिक योजनाएँ विकसित करनी चाहिए जो प्रौद्योगिकी-प्रेरित व्यवधानों के को रोकें। इसमें वित्तीय संस्थानों और व्यापक वित्तीय प्रणाली पर साइबर घटनाओं या फिनटेक विफलताओं के संभावित प्रभाव का आकलन करने के लिए नियमित दबाव परीक्षण और अनुकरण संपादित करना शामिल है। अच्छी तरह से तैयार होने से, जमा बीमाकर्ता यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे संकट की स्थिति में तेजी से और प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए तैयार हैं, जमाकर्ताओं को संभावित नुकसान को कम करते हैं और वित्तीय प्रणाली में जनता का विश्वास बनाए रखते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर, जमा बीमा वित्तीय सुरक्षा-जाल प्रणाली का एक प्रमुख स्तंभ है, जो वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवेकपूर्ण विनियमन, पर्यवेक्षण, समाधान ढांचे और अंतिम ऋणदाता व्यवस्थाओं के साथ-साथ, जमा बीमा बैंकों की भागदौड़ को रोकने में मदद करता है जो व्यापक वित्तीय संकटों में बदल सकता है। जमाकर्ताओं को यह आश्वासन देकर कि कवरेज सीमा तक उनकी निधियाँ सुरक्षित हैं, जमा बीमा बैंकिंग क्षेत्र के भीतर विश्वास और स्थिरता को बढ़ावा देता है।

विकसित हो रहा तकनीकी परिदृश्य जमा बीमाकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। सक्रिय, जोखिम-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर - जिसमें बेहतर निगरानी, जोखिम-आधारित प्रीमियम, पर्यवेक्षी रेटिंग पर निर्भरता, दावों का तेजी से निपटान और उद्योग सहयोग शामिल है - जमा बीमाकर्ता इन जोखिमों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन कर सकते हैं।

इस तरह के सम्मेलन मानक निर्माताओं, विनियामकों, पर्यवेक्षकों और बीमाकर्ताओं को एक साथ आने, इन चुनौतियों पर चर्चा करने और अभिनव समाधान प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप मूल्यवान अंतर्दृष्टि और कार्रवाई योग्य रणनीतियाँ लेकर वापस जाएँगे जो इन उभरते जोखिमों से निपटने में हमारे सामूहिक प्रयासों को मज़बूत करेंगी। मैं इस व्यावहारिक कार्यक्रम की व्यवस्था करने और सार्थक संवाद के लिए अनुकूल माहौल बनाने में उनके असाधारण प्रयासों के लिए आयोजकों को भी अपना हार्दिक धन्यवाद देना चाहूँगा। धन्यवाद।

आलेख

अर्थव्यवस्था की स्थिति*

क्या खाद्य कीमतों में प्रभाव-विस्तार हो रहा है?

केंद्रीय बजट 2024-25: एक आकलन

भारत के सेवा क्षेत्र के लिए अतिरिक्त क्षमता का अनुमान

फिनटेक और केंद्रीय बैंकों का विकास: एक टेक्स्ट माइनिंग-आधारित सर्वेक्षण

निजी कॉर्पोरेट निवेश: 2023-24 में संवृद्धि और 2024-25 के लिए संभावना

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में प्रगति को मापना: बजट दस्तावेजों पर नैचुरल लैंग्विज प्रोसेसिंग (एनएलपी) का अनुप्रयोग